जीवन परिचय

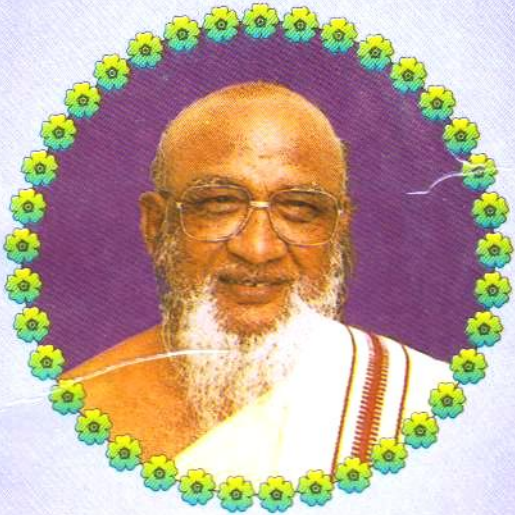

जैन दिवाकर गच्छाधिपति

आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म. सा.

आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न
सूरीश्वरजी महाराज

-: प्रेरक :-

कार्यदक्ष आचार्य श्रीमद् विजय जगच्चन्द्र
सूरीश्वरजी महाराज

-: लेखक :-

मुनि नवीन चन्द्र विजय

-:प्रकाशक:-

श्री जैन श्वेतांबर दादावाडी टेम्पल ट्रस्ट,
नेहरु स्टेडियम के सामने ९८१/ ९८२,
शुक्रवार पेठ, पूना 411002.
फोन. न. 581221

-: पुस्तक नाम :-

आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म.

-: लेखक :-

मुनि नवीन चन्द्र विजय

-: प्राप्ति स्थान :-

श्री विजयानंद सूरि साहित्य प्रकाशन फाउंडेशन

पावागढ़ - ३८९३६०

ता. हालोल, जि. पंचमहाल (गुजरात)

फोन : ०२६७ ६४५६०६

-: प्रकाशन :-

कार्तिक वदि नवमी, दि. २४-१०-९७

पूज्य गुरुदेव का ७५ वाँ जन्म दिन अमृतमहोत्सव पाँचवाँ संस्करण

प्रति- ५,०००

-: मुद्रक :-

कल्पना आर्ट प्रेस

पूना - २

फोन : ४५५७३८

अपनी बात

परमार क्षत्रियोद्धारक, चरित्र चूड़ामणि, जैन दिवाकर, शासन शिरोमणि, तपस्वी सम्राट, जन-जन के श्रद्धा केन्द्र, हमारी प्रेरणा के स्त्रोत, प्रातःस्मरणीय, पुज्य गुरुदेव आचार्य श्रीमद् **विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी** महाराज वर्तमान युग के दिव्यात्मा ज्योति पुरुष है। उनसे केवल जैन शासन ही नहीं, अपितु समस्त मानव जाति गौरव मंडित हो रही है। उनका महान तपस्वी, पुरुषार्थी, चारित्रशील एवं अप्रमत्त जीवन हम सभी के लिए प्रेरक दीप शिखा तरह है।

हमारे मार्गदर्शक एवं कार्यदक्ष आचार्य श्रीमद् विजय जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से पुज्य गुरुदेव का संक्षिप्त जीवन परिचय **'आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज'** के नाम से उनके ७५ वे जन्मदिन अमृत महोत्सव पर श्री विजयानंद सूरि साहित्य प्रकाशन फाऊंडेशन, पावागढ़ की ओर से इसका पांचवा संस्करण प्रकाशित हो रहा है यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है।

इसका प्रथम संस्करण १९९१ में जयपूर में प्रकाशित हुआ था। द्वितीय संस्करण श्री वल्लभ सार्वजनिक ट्रस्ट पावागढ़ की ओर से प्रकाशित हुआ था। इसका तृतीय संस्करण श्री ऋषभदेव जी महाराज जैन धर्म टेम्पल एण्ड ज्ञाति ट्रस्ट एवम् श्री राजस्थान श्वे. प. पू. जैन संघ ठाणे की ओर से प्रकाशित हुआ था। चतुर्थ संस्करण सेठ मोतिशा रिलिजियस एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट, भायखला, मुम्बई की ओर से प्रकाशित हुआ। या पांचवां संस्करण श्री जैन श्वेताम्बर दादावाडी टेम्पल ट्रस्ट पूणे की ओर से प्रकाशित किया गया है।

पूज्य गुरुदेव का उदात्त जीवन महान व्यक्तित्व एवम् युगीन कार्यों को सम्पूर्ण न्याय देना असंभव है। यह पुस्तिका तो उनकी व्यक्तित्व की झांकी मात्र है। इस झांकी से गुरुभक्तजन अवश्य लाभान्वित होंगे ऐसी आशा है। **- मुनि नवीन चन्द्र विजय**

-: अनुक्रम :-

1.	जन्म	5
2.	शिक्षा और दीक्षा	6
3.	गुरु वल्लभ के चरणों में आठ वर्ष	8
4.	परमार क्षत्रियों का उद्धार	10
5.	तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य	13
6.	अदम्य पुरुषार्थी	15
7.	आत्मवल्लभ समुद्र गुरु पाट परंपरा के श्रेष्ठ संवाहक	16
8.	साधर्मिकों के लिए विजयइन्द्र नगर का निर्माण	18
9.	शासन शिरोमणि	21
10.	ऐतिहासिक पारणा महोत्सव	24
11.	गौरवमय कार्य	26
12.	पावागढ़ में श्री माणिभद्र वीरदेव सिद्धपीठ की स्थापना	30
13.	श्रीमद् विजयानंद सूरि स्वर्गारोहण शताब्दी युगीन कार्य	34
14.	भायखला ऐतिहासिक चातुर्मास	38
15.	पूना नगर में शासन प्रभावना व स्मरणीय चातुर्मास	46
16.	जीवन सरिता के तटपुष्प	53

जन्म

महापुरुषों का जीवन एक चमत्कार होता है । उनका जन्म तो एक साधारण मनुष्य की तरह ही होता है; पर जीते हैं वे एक असाधारण मनुष्य की तरह ।

जीवन तो प्रत्येक व्यक्ति को मिलता है; किन्तु जिस जीवन से देश और समाज का उद्धार होता हो, धर्म और संस्कृति का उत्थान होता हो और मानवता की सेवा होती हो, ऐसा जीवन जीने का साहस किसी-किसी में होता हैं ।

भारतीय संस्कृति और समाज में सन्त महापुरुषों की अपनी विशिष्ठ देन रही है। इन्ही सन्तों के कारण भारत देश आज तक उसकी अमूल्य संस्कृति और ज्ञान की धरोहर के साथ जिंदा है और रहेगा ।

भारतीय संस्कृति के प्राण हैं अहिसा और त्याग। इन दोनों आदर्शो को चरितार्थ किया है जैन धर्म की श्रमण परम्परा ने । यह परम्परा भगवान महावीर स्वामी से लेकर आज तक अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। भद्रबाहुस्वामी,हेमचन्द्राचार्य,हरिभद्र सूरि, हीर विजय सूरि, आचार्य विजय वल्लभ सूरि आदि अनगिनत आचायों ने उसी परम्परा को समय-समय पर उजागर किया है ।

उसी श्रमण परम्परा के उज्जवल नक्षत्र हैं जैन दिवाकर, परमार क्षत्रियोद्धारक, चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज, जिनका जीवन एक चमत्कार है, जिनके कुशल नेतृत्व में संघ-

समाज विकास के नये चरण पड़े हैं, जिनसे शासन प्रभावना के अनगिनत कार्य सम्पन्न हो रहे हैं, जिनके उदात्त, महान और आदर्श जीवन से केवल जैन ही नही;पर समस्त मानव जाति गौरवान्वित हो रही है, जिन्हें पाकर जैन धर्म और समाज धन्य हुआ है । ऐसे पूजनीय आचार्य श्रीजी का जन्म ई. १९२३ में गुजरात के बड़ौदा जिले के सालपुरा गांव में परमार क्षत्रिय वंश में हुआ था । उनके पिता का नाम श्री रणछोड़ भाई था और माता का बालुबेन। जन्म का उनका नाम मोहन कुमार था। उनके माता-पिता अत्यन्त धार्मिक वृत्ति के थे। माता-पिता के धर्मिक संस्कारों का प्रभाव बालक मोहन कुमार पर भी पड़ा और बचपन में ही खेल के आंगन में उनके मन और हृदय में त्याग और वैराग्य के बीज पड़ गये । कुमार मोहन की दस वर्ष की अवस्था में ही उनके माता-पिता की मृत्यु हो गई । उससे कल्पना की जा सकती है कि दस वर्ष के उस बालक को अपने मातापिता के वियोग का कितना आघात लगा होगा ।

शिक्षा और दीक्षा

कुमार मोहन ने प्रारम्भिक अक्षर ज्ञान गांव की छोटी-सी स्कूल में प्राप्त किया। ग्यारह वर्ष की अवस्था में वे सालपुरा से बाईस कि. मी. दूर डभोई में पन्यास श्रीरंग विजयजी महाराज के पास चले गए । वहाँ उन्होने जैन धर्म का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त किया ।

ई. सन् १९३६ में पंन्यास श्रीरंग विजयजी की प्रेरणा से बोडेली में परमार क्षत्रिय भाईयों के बच्चों के लिए 'कुमार छात्रालय' में पढते रहे ।

कुमार मोहन के हृदय में पड़ा वह वैराग्य का बीज अंकुरित होकर अब पुष्पित और पल्लवित हो गया था । उन्होने अपने चाचा सीताभाई से कहा- "मैं सांसारिक मोह जाल में फसना नहीं चाहत । मैं दीक्षा लेकर आत्म कल्याण करना चाहता हूँ ।" यद्यपि उनके चाचा नहीं चाहते थे कि मोहन दीक्षा ले परंतु कुमार मोहन के दृढ निर्णय के आगे वे झुक गए । न चाहते हुए भी उन्होने कुमार मोहन को भारी मन से आँखो में आँसू लिए दीक्षा के लिए विदा किया ।

सत्रह वर्षीय कुमार मोहन दीक्षा ग्रहण के लिए नरसंडा(गुजरात) में बिराजित मुनि श्रीविनय विजय जी महाराज के चरणों में उपस्थित हुए। मुनि श्रीविनय विजय जी महाराज के चरणों में उपस्थित हुए । मुनि श्रीविनय विजयजी से कुमार मोहन का परिचय बोड़ेली में ही हो गया था जब मुनि श्रीविनय विजयजी जीवनलालजी के नाम से बोडेली में जैन धर्म के प्रचार का कार्य कर रहे थे ।

मुनि श्री विनय विजयजी, कुमार मोहन को अच्छी तरह जानते थे । उनकी विनय, नम्रता, सरलता, वैराग्य और अध्यनशीलता से पूर्णतया अवगत थे । अतः उन्होने कुमार मोहन की योग्यता और पात्रता देखकर

ई. सन् १९४१ में नरसंडा गांव में दीक्षा दे दी। उनका नया नाम रखा गया मुनि श्री इन्द्र विजयजी महाराज। वे परमार क्षत्रिय वंश के आद्य जैन दीक्षित हुए।

गुरू वल्लभ के चरणों में आठ वर्ष

मुनि श्री इन्द्र विजयजी का गहन अध्ययन उनके गुरू मुनि श्री विनय विजयजी के पावन, प्रेरक, सानिध्य और मार्ग दर्शन में प्रारम्भ हुआ। गुजरात से विहार करते हुए वे राजस्थान में पधारे। यहा बीजोवा में उनके दादा गुरू महेन्द्र पंचांग के रचयिता आचार्य श्री विकासचन्द्र सूरिजी महाराज के कर कमलों से सन् १९४५ उनकी बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई।

अपनी दीक्षा के सात वर्ष के बाद वे सन् १९४८ में सादड़ी (राजस्थान) में विराजित पंजाब केसरी, युगवीर आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज की छत्रछाया में आए। वहीं से उनका वास्तविक विकास प्रारंम्भ हुआ। यहाँ उन्होने संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। उन भाषाओं के साहित्य का अध्ययन किया। आचार्य श्रीविजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज से उन्होने आगमों की वाचना ली। अब के उन्ही की सेवा में रहने लगे। उनका पावन सानिध्य, स्नेह और कार्यों का मुनि श्री इन्द्र विजयजी के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। अपनी सूझबूझ, गुरुकृपा एवं योग्यता के बल पर वे शीघ्र ही विद्वान मुनिराज बन गए, अब

उन्होने प्रवचन करना भी प्रारम्भ कर दिया था।

सन् १९५४ की आश्विन कृष्णा दशमी की रात्रि को पंजाब केसरी, युगवीर आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज का बम्बई में स्वर्गवास हो गया। समग्र जैन समाज शोक में डूब गया। उनके स्वर्गवास से जैन धर्म और समाज की अपूरणीय क्षति हुई जिसकी पूर्ति आज तक न हुई है न होगी। वह दैदिप्यमान नक्षत्र जिसके दिव्य प्रकाश में मानव जाति अपना रास्ता खोजती थी, अँधकार में डूब गया।

शान्तमूर्ति आचार्य श्री विजय समुद्र सूरीश्वरजी महाराज उनके प्रमुख शिष्य थे। वे अपने अनुभव, सेवा, कार्यकुशलता, भक्ति, दूरदर्शिता आदि गुणों के कारण आचार्य श्री विजय वल्लभ के पट्टधर घोषित हुए। श्रीसंघ के सफल संचालन का भार उनके कंधों पर आ पड़ा और उन्होंने कुशलतापूर्वक इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करना प्रारम्भ किया।

इधर मुनि श्री इन्द्र विजय जी महाराज के योगोद्वहन पूर्ण हो गए थे। उनके पास एक मुमुक्षु ने दीक्षा अंगीकार की जिनका नाम मुनि श्रीओंकार विजयजी रखा गया। वे शान्तमूर्ति आचार्य श्रीसमुद्र सूरीश्वरजी महाराज के साथ विहार कर बम्बई से सूरत पधारे। यहाँ उन्हे आचार्य श्री ने सन् १९५४ चैत्र कृष्णा तृतीया के दिन गणिपद से अलंकृत किया।

अब गणि श्री इन्द्र विजयजी महाराज स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए सक्षम हो गए थे। सर्व प्रथम उन्होने अपने जन्म क्षेत्र में और परमार क्षत्रिय वंश में जैन धर्म के प्रचार का महान कार्य करने का संकल्प किया इसके लिए उन्हें मुनिश्री जिनभद्र विजयजी पहले से ही प्रेरित कर चुके थे। धर्म प्रचार का यह महान कार्य उन्ही की राह देख रहा था। उन्होने आचार्य श्री समुद्र सूरीश्वरजी महाराज के चरणों में मस्तक रखा, आशीर्वाद लिया और बड़ौदा जिले के बोडेली शहर में पहुँचे।

परमार क्षत्रियों का उद्धार

गुजरात के बड़ौदा एवं पंचमहाल जिलो में से कि. मी. के अन्तर में परमार क्षत्रिय वंश के लोगों के लगभग सात सौ गाँव बसे हुए हैं। इस क्षत्रिय वंश का इतिहास बहुत लम्बा है। सर्व प्रथम इसका उद्‌भव आबू (राजस्थान) में हुआ था। इसकी उत्पत्ति अग्नि कुल से मानी जाती है। ऐतिहासिक नगरी चन्द्रावती इनकी प्रमुख राजधानी थी। विदेशी और विधर्मियों ने चढ़ाई की और चन्द्रावती नगरी का विनाश हुआ। वहाँ से विस्थापित होकर परमार क्षत्रिय उज्जैन तथा मध्यप्रदेश एवं गुजरात के सीमान्त प्रदेश में जाकर बस गए। कुछ ही समय में इन्होंने अपने भुजबल से सम्पूर्ण मालवा (मध्यप्रदेश) को अपने अधीन कर लिया। इस परमार क्षत्रिय वंश के सम्राटो में विक्रमादित्य न्याय के लिये मुँज वीरता के लिए और महाराजा भोज विद्या के

लिए प्रसिद्ध हुए।

भारत स्वातंत्र होने तक बड़ौदा और पंचमहाल जिले में बस गए परमार क्षत्रियों की मुख्य राजधानी देवगढ़ थी। इसके अतिरिक्त अन्य कई छोटे-छोटे राज्य थे। इनका कार्य युद्ध की शिक्षा प्राप्त करना और युद्ध करना था। एक समय था जब सम्पूर्ण भारत में परमार क्षत्रिय वंश की वीरता की चर्चा थी। बाद में इन्होंने अपना व्यवसाय कृषि को चुना। उन पर गुजरात के धार्मिक वातावरण का प्रभाव था। अतः वे जैन धर्म के अनुयायी न होने पर भी पूर्णतया शाकाहारी थे। उनका जीवन सरलता, सौम्यता, मानवता एवं निष्कपटता से ओतप्रोत था। वे परिश्रमी, वीर और निडर थे। जातीय स्वाभिमान की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी।

बड़ौदा जिले का एक छोटा सा प्रमुख शहर बोडेली है। इसी शहर के आस-पास परमार क्षत्रिय वंश के लोग बसे हुए हैं।

सन् १९२२ में श्री. सोमचन्द केशव भाई जो जैन धर्म के उपासक थे, बोडेली में अपनी दूकान चला रहे थे। परमार क्षत्रिय भाई उनकी दूकान पर अपना खेती का माल बेचने-खरीदने आया-जाया करते थे। श्री सोमचन्द भाई अकसर उनसे जैन धर्म की महानता और मौलिकता की चर्चा करते रहते थे। उनकी चर्चा का परिणाम यह आया कि कुछ परमार क्षत्रिय भाईयों ने उनसे जैन

धर्म स्वीकार करने की अपनी इच्छा जताई। वे केवल छह परमार क्षत्रिय भाई थे। श्री सोमचन्द भाई उन्हें डभोई में विराजित पंन्यास श्रीरंग विजयजी के पास ले गए और नमस्कार महामन्त्र सिखा कर, वासक्षेप डलवाकर उन्हें विधिवत् रूप से जैन बनवाया। धीरे-धीरे यह संख्या बढ़ती रही और कुछ ही समय के बाद यह संख्या सौ तक पहुँच गई। इस प्रचार कार्य को व्यवस्थित रूप देने के लिए पंन्यास श्रीरंग विजजी की प्रेरणा से सन् १९३६ में बोडेली में 'श्री परमार क्षत्रिय जैन धर्म प्रचारक सभा'' की स्थापना की गई।

जैन धर्म के इस प्रचार कार्य को अब बड़े स्तर पर व्यापक रूप से करने की आवश्यकता थी इसके लिए ऐसे कर्मठ साधु की आवश्यकता थी जो उनकी भाषा से रीति-रिवाजों से, मान्यताओं से और वहाँ की परिस्थितियों से भली भाँती परिचित हो। यह कितना सुनहरी संयोग था कि इधर उसी क्षेत्र के परमार क्षत्रिय वंश के प्रथम जैन साधु बने गणि श्री इन्द्र विजयजी इस प्रचार कार्य को आगे बढ़ने के लिए बोडेली में पधार गए थे।

वह सन् १९५६ वाँ साल था। गणि श्री इन्द्र विजयजी इस प्रचार कार्य में तन-मन से जुट गए और फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। केवल एक नहीं, दो नही, तीन नहीं, पांच नहीं, दस नही; पर बारह वर्षों तक इस क्षेत्र में घर-घर, गली-गली, गाँव-गाँव प्रचार करते हुए घूमते रहे। उनके मन में बस एक ही

विश्वास था कि कैसे अधिक से अधिक लोगों को जिन का अनुयायी जैन बनाऊँ। और उन्हें समकित की प्राप्ति कराऊँ। अपनी बुलन्द आवाज, ज्ञान गाम्भीर्य एवं समझाने की सरल शैली के कारण इस क्षेत्र क्षेत्र में उनके प्रवचनों की धूम मची रही। ईसाई मिशनरी, रामानन्दी और स्वामीनारायण सम्प्रदायक के धर्म गुरु यहाँ पहले से ही अपने धर्म और मत के प्रचार कार्य में लगे हुए थे। जैसे ही गणि इन्द्र विजयजी इस क्षेत्र में आए वे उनके सामने टिक नहीं पाए।

गणि श्री इन्द्र विजयजी महाराज के बारह वर्षों के भगीरथ पुरुषार्थ के फलस्वरूप इस क्षेत्र में एक लाख परमार क्षत्रिय भाई-बहन (इसमें पटेल भी सम्मिलित हैं) नये जैन बने। ११५ मुमुक्षओं ने दीक्षा अंगीकार की। ५५ गाँवो में जिन मन्दिर बने और उतने ही गाँवों में जैन धार्मिक पाठशालाँ खोली गई। अब गणिश्री इन्द्र विजयजी 'परमार क्षत्रियोद्धारक' कहलाने लगें।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य

जैन धर्म के महान प्रचार कार्य एवं अद्‌भूत शासन प्रभावना के कारण गणि श्री इन्द्र विजयजी भारत के जैन समाज में प्रसिद्ध हो गए। उनके इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा समस्त जैन समाज ने की। स्थान-स्थान पर उनका स्वागत और अभिनन्दन होने लगा।

शान्तमूर्ति आचार्य श्री विजय समुद्र सूरीश्वरजी महाराज ने उन्हें सन् १९७० में बसन्त पंचमी के

दिन वरली, बम्बई में 'आचार्य पद' से विभूषित किया। गणि श्री इन्द्र विजयजी महाराज अब आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज बन गए।

कुछ ही वर्षों के बाद आचार्य श्री विजय समुद्र सूरीश्वरजी महाराज ने उन्हें अपना पट्टधर घोषित कर दिया। सन् १९७७ में राष्ट्र संत, आचार्य श्री विजय समुद्र सूरीश्वर जी म. सा. का मुरादाबाद में स्वर्गवास हो गया और उसी के साथ श्री संघ के संचालन की सम्पूर्ण जिम्मेवारी आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरिजी महाराज के कंधों पर आ पड़ी।

अपने उत्कृष्ट चारित्र, उदात्त जीवन, घोर तपश्चर्या, संयम की अविचल साधना, आत्म-बल,मन की उदारता और हृदय की विशालता, कुशल नेतृत्व आदि महापुरूषोचित गुण सम्पन्नता के कारण आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज जैन धर्म और समाज के प्रमुख, विशिष्ट एवं सर्वमान्य आचार्य बन गए।

क्योंकि इस काल में यहाँ तीर्थंकरों की उपस्थिति नहीं होती अतः उनके प्रतिनिधि आचार्य होते हैं। वे आचार्य जो शास्त्रोक्त छत्तीस गुणों से युक्त हों। समस्त धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करना, त्याग और वैराग्य, संयम और तपश्चर्या एवं पंच महाव्रतों का स्वयं पालन करना और दूसरों को उनका उपदेश देना, समाज को धर्म से जोड़े रखना, धर्म को अपने शुद्ध रूप में

परिभाषित करना और उसे युगानुरूप ढाल कर सदा जीवंत रखना, तिर्थंकरों की वाणी जो शास्त्रों में निहित है उसका प्रतिपादन करना और समाज को सही दिशा-निर्देश देना यही आचार्यों का पुनीत कर्तव्य है। कहना न होगा कि आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज वास्तविक अर्थ में तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य हैं।

अदम्य पुरुषार्थी

निरन्तर पुरुषार्थ जैन दिवाकर आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म. सा का जीवन मन्त्र है। समाज के जो कर्णधार हैं, समाज के नेतृत्व की बागडोर जिनके हाथ में है, जो समाज की दिशा बदलता चाहते हैं, जो नव-पथ का निर्माण और नयी व्यवस्था को कायम करना चाहते हैं उन्हें प्रचंड पुरुषार्थी होना पड़ता है।

इसी पुरुषार्थ के बल पर आचार्य श्री ने अनेक बाधाओं, विघ्नो और अपमानों को सहते हुए एक लाख परमार क्षत्रियों को जैन बनाया। वर्तमान युग में उन्होंने यह कार्य कर एक चमत्कार किया हैं। उन्होंनें यह चमत्कार कर संसार को बता दिया कि इस जगत के प्रचंड पुरुषार्थ से सब कुछ सम्भव है। प्राचीन इतिहास को उन्होंने पुनः दोहराया है। जैन धर्म के इतिहास में ऐसे कुछ महापुरुष हुए हैं जिन्होंने इसी प्रकार का महान कार्य किया था। आचार्य श्रीजी का मानना है कि जो उस समय सम्भव था वह इस समय असम्भव कैसे हो

सकता हैं। जो उस समय हो सकता था वह इस समय भी हो सकता है।

आचार्य श्रीजी का यह पुरुषार्थ उनकी जीवन साधना के कण-कण में बसा हुआ है। त्याग में पुरुषार्थ, तपस्या में पुरूषार्थ, प्रवचन में पुरुषार्थ विहार में पुरुषार्थ, जप में पुरुषार्थ वे पुरुषार्थ की प्रत्यक्ष प्रतिमा हैं।

उनका पुरुषार्थ लोगों को प्रेरित करता है कि उठो, अपनी शक्ति को पहचानों, जो बैठा रहेगा उसका भाग्य भी बैठ जाएगा जो जागेगा उसका भाग्य भी जग जाएगा। निरन्तर पुरूषार्थ इतिहास का सृजन करता है।

आत्म वल्लभ समुद्र गुरु परम्परा के श्रेष्ठ संवाहक

जैन धर्म और समाज में आत्म-वल्लभ-समुद्र गुरु परम्परा की अपनी स्वतन्त्र पहचान है। इस गुरू परम्परा ने जैन समाज को धर्म, विद्या, गौरव, प्रतिष्ठा और भव्यता आदि बहुत कुछ दिया है जिनका वर्णन नहीं हो सकता। उनके उन अनन्त उपकारों से समाज कभी भी उऋण नहीं हो सकता। इस परम्परा ने जैन धर्म और समाज को बुनियादी चिंतन दिया। युगानुरूप नये विचार दिये। ज्ञान और विवेक के चक्षु प्रदान किये। इस परम्परा ने पंजाबी गुरूभक्तों को केवल धर्म ही नहीं दिया; अपितु जीवन भी दिया है, जीवन का संगीत भी दीया है, इसलिए प्रत्येक गुरुभक्त उस पाट परम्परा

को समर्पित है। उनकी पावन, धवल स्मृति को भेंट करने के लिए हमारे पास श्रद्धा के पुष्प है, और भक्ति के गीत हैं। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।

आत्म-वल्लभ समुद्र गुरू की उसी अद्वितीय परम्परा के वर्तमान संवाहक है आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज जब से उन्होंने यह पदभार सम्भाला है तब से वे इस महत जीम्मेदारी को भली-भांति वहन करते आ रहे हैं। गुरु वल्लभ ने जो स्वप्न देखे थे और जिन स्वप्नों को पूरा करने के लिए वे जीवन पर्यन्त जूझते रहे और जो अधूरे रह गये थे उन्हीं स्वप्नों को आचार्य श्री जी साकार कर रहे हैं चाहे वे स्वप्न सहधर्मी भाइयों के उत्कर्ष का हो या जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों की एकता का। वे उन्हीं के कदम से कदम मिला कर चल रहे हैं। बल्कि कहा जा सकता हैं कि गुरुवल्लभ के इन कार्यों को उन्होंने सहस्त्रागुणा आगे बढ़ाया है।

स्वर्गीय गुरुत्रय ने हमेशा पंजाबी जैन मूर्तिपूजक समाज की चिन्ता की थी। वर्तमान आचार्य श्री जी भी इस चिन्ता से मुक्त नहीं है। गुरु वल्लभ के भक्त और प्रशंसक भारत के कोने-कोने में बसे हुए हैं। अतः देश के हर कोने से आचार्य श्री जी को पधारने की आग्रहपूर्ण विनती होती है, उन सभी विनंतियों को अपनी झोली में रखकर वे सर्वप्रथम पंजाब की विनती स्वीकार करते हैं।

युगवीर आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज की राजस्थान, विशेष रूप से गोड़वाड़ क्षेत्र पर अत्यधिक कृपा दृष्टि रही है। इसका ज्वलंत उदाहरण है यहाँ की शिक्षण संस्थाएँ। शान्तमूर्ति आचार्य श्रीविजय समुद्र सूरीश्वरजी महाराज इसी पाली, राजस्थान के रत्न थे।

आज से साठ वर्ष पहले गोड़वाड़ क्षेत्र को गंवार और पिछड़ा हुआ क्षेत्र माना जाता था। इस क्षेत्र को शिक्षित और धर्मनिष्ठ बनाने का श्रेय आचार्य श्रीविजय वल्लभ एवं उनके शिष्य आचार्य श्रीललित सूरिजी महाराज को जाता है। गोड़वाड़ क्षेत्र में आज जो भव्यता, समृद्धि और विकास दिखाई दे रहा है यह इन्हीं महापुरुषों के कारण। इसके लिए राजस्थानी गुरुभक्त उनके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकते। वरकाणा, फालना आदि गुरुदेव की शिक्षा संस्थाओं में पढ़े हुए विद्यार्थी मद्रास, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, अहमदाबाद आदि शहरों में व्यापार के लिए गए और आज उनके पास किसी चीज की कमी नहीं है। जैन दिवाकर आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज ने भी राजस्थानी भाइयों की विनीती को सदैव प्रमुख स्थान दिया है।

साधर्मिकों के लिए विजयइन्द्र नगर का निर्माण

जैन दिवाकर आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी

महाराज के हजारों अनन्य भक्त है। उनमें श्री अभयकुमारजी ओसवाल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

धनवान होना कोई बड़ी बात नहीं है। महत्वपूर्ण है धन का सदुपयोग। पैसा तो कइयों के पास होता है; पर उसका सदुपयोग तो कुछ ही लोग कर पाते हैं। लोगों के पास छातियाँ तो होती हैं पर दिल नहीं होता। उस छाती का कोई महत्व नहीं जो दिलदार न हो चाहे वह कितनी ही लम्बी, चौड़ी और मजबूत क्यों न हो।

श्री अभयकुमारजी ओसवाल ने आचार्य श्रीजी के सर्वप्रथम दर्शन दिल्ली में सन् १९८८ में किये थे। उस समय उन्होंने आचार्य श्रीजी की प्रेरणा से एक समारोह में सातों क्षेत्रों के सिंचन के लिए एक करोड़ के दान की घोषणा की थी।

तब से श्री अभयकुमारजी ने आचार्य श्रीजी के चरण पकड़े और स्वयं को उनके चरणो में समर्पित कर दिया। जो कुछ है सो तेरा और तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मोरा' की तरह उन्होंने फिर पीछे मुड़ कर नही देखा। कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्रीहेमचन्द्राचार्य एवं महाराजा कुमारपाल की उज्जवल परम्परा की झांकी यहाँ देखी जा सकती है।

लक्ष्मी जब सद् गुरु के चरणों में ढलती है तो नवनिर्माण प्रारम्भ होता है। स्वयं लक्ष्मी ऐसे सद् गुरु के चरणों में स्थान पाकर धन्य बन जाती है। लक्ष्मी यहाँ बंध जाती है वह मदाय न होकर दानाय होती है।

वह दान का कारण बनती है अभिमान का नहीं। उस लक्ष्मी को बढ़ने का आशीर्वाद सद् गुरु भी देते हैं जो दूसरों की भलाई के लिए व्यय की जाती है।

श्री अभयकुमारजी ओसवाल ने आचार्य श्रीजी की प्रेरणा से मध्यमवर्गीय भाइयों के लिए पाँच करोड़ की लागत से लुधियाना (पंजाब में श्रीविजय इन्द्र नगर) आवास कालोनी का निर्माण किया है। जिसमें सात सौ परिवार सुखपूर्वक रहते हैं। उसी के अंतर्गत जगवल्लभ पार्श्वनाथ भगवान का एक भव्य जिन मन्दिर निर्मित हुआ है।

इसके अतिरिक्त श्री अभय कुमारजी ओसवालने पच्चीस लाख रूपयों से हस्तिनापुर में पारणा हाल के निर्माण के लिए, इक्यावन लाख रूपये अहमदनगर (महाराष्ट्र) में हॉस्पिटल के लिए, अक्यावन लाख पावागढ तिर्थ में सातों क्षेत्रे के लिए दान दिये हैं दे रहे हैं। वे आचार्यश्री के हर आदेश का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

जैन धर्म का यह सद्भाग्य रहा है कि यहाँ समय-समय पर भामाशाह, जगडुशाह, सेठ धन्नाशाह पोरवाल, सेठ हठिसिंह, सेठ मोतीशाह जैसे कोई न काई दानेश्वर पैदा होते रहते हैं जो प्राचीनकाल से चली आ रही दान धारा को अटूट रखते है।

जैन धर्म की परम्परा का इतिहास जिस आदर और सम्मान से भामाशाह और जगडुशाह जैसे दानेश्वरों

को याद करता है उसी आदर और सम्मान से श्री अभयकुमारजी ओसवाल को भी याद करेगा।

शासन शिरोमणी

गोड़वाड़ का सादड़ी श्रीसंघ प्रारंभ से ही श्री आत्म वल्लभ समुद्र इन्द्र गुरु परंम्परा का अनन्य और परम भक्त रहा है।

परमार क्षत्रियोद्धारक, चारित्र चूड़ामणि, जैन दिवाकर आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज के चरणों में सादड़ी श्रीसंघ ने दो चातुर्मास प्रथम सादड़ी में और दूसरा पालिताणा में करने की आग्रहपूर्ण विनंती की थी।

सादड़ी श्रीसंघ की अनन्य भक्ति, भावना और सेवा देखकर उसे अनुमति प्रदान की गई। इस तरह सन् १९९२ का पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास सादड़ी नगर में हुआ। अभूतपूर्व शासन प्रभावना, चिरस्मरणीय महोत्सवों और ऐतिहासिक कार्यों के कारण उनका यह चातुर्मास गोड़वाड़ और सादड़ी के धार्मिक इतिहास का अविभाज्य अंग बन गया।

यहाँ पूज्य गुरुदेव की निश्रा में उपधान तप हुआ। इस उपधान तप के माला महोत्सव में गणिवर्य श्री जयन्त विजयजी को "पंन्यास पद से अलंकृत किया गया। सादड़ी श्रीसंघ ने पूज्य गुरूदेव को 'शासन शिरोमणि' पद से अलंकृत किया। पोरवाल न्याति नोहरा

में श्री सुविधिनाथ भगवान की भव्य प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। शा. बाबूलालजी बालचंदजी रांका द्वारा निर्मित श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ नूतन जिन मंदिर की अंजनशलाका-प्रतिष्ठा तथा दादावाड़ी में अधिष्ठायक देवों की भव्य प्रतिष्ठाएँ ऐतिहासिक रुप से पूरिपूर्ण हुई। श्री विजय वल्लभ जनरल होस्पिटल का उद्घाटन और अन्त में सादड़ी (राणकपूर) से पालीताणा का छ'री पालित संघ निकाला गया।

छरीपालित संघ के प्रस्थान के दिनों में यद्यपि अयोध्या कांड के कारण संपूर्ण देश की स्थिति भयावह हो गई थी फिर भी पूज्य गुरुदेव के दृढ़ मनोबल के फलस्वरूप यह संघ निर्विघ्नता पूर्वक पालीताणा पहुँच गया।

इस सम्पूर्ण छ'रीपालत संघ के उग्र विहार में पूज्य गुरुदेव ने अपनी ५३ वीं वर्धमान आयंबिल तप की ओली चालू रखी और दिनांक ४-१-९३, गुरुवार को पालीताणा में उसका पारणा किया।

दि. १५-३-९३, सोमवार, चैत्र वदी अष्टमी के दिन से पूज्य गुरुदेव ने इस अवस्था में भी वर्षीतप जैसी महान और कठिन तपस्या प्रारंभ की।

दि. २४-४-९३ से पालीताणा में पूज्य गुरुदेव ने विश्व वद्य विभूति, पंजाब देशोद्धारक, न्यायाम्भोनिधि आचार्य श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वरजी महाराज की स्वर्गारोहण शताब्दी प्रारंभ की। इस पावन प्रसंग पर

कोंकण दीपक पंन्यास श्री रत्नाकर विजयजी म. सा. को व शासन प्रभावक पंन्यास प्रवर श्री जगच्चन्द्र विजयजी महाराज को तथा पंन्यास श्री नित्यानंद विजयजी को 'आचार्य' पद से अलंकृत किया गया। पंन्यास श्री बसंत विजयजी को 'उपाध्याय' पद से विभूषित किया गया।

दि. ३०-६-९३ को पूज्य गुरुदेव एवं कार्यदक्ष आचार्य श्रीमद् विजय जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा-१०१ का पालीताणा की सौधर्म निवास धर्मशाला में सादड़ी श्रीसंघ की ओर से चातुर्मासिक प्रवेश किया।

विजय वल्लभ समुदाय के गच्छाधिपती की निश्रा में इतनी विशाल संख्या में साधु-साध्वी परिवार का किसी एक ही स्थान पर एकत्र होकर चातुर्मास करने का यह विजय वल्लभ समुदाय में सर्वप्रथम अवसर था।

पूज्य गुरुदेव की निश्राा में चातुर्मास करने के लिए पांच सौ आराधक भाई-बहिन पालीताणा पहुंचे थे। और उनके चातुर्मासिक प्रवेश के साथ ही आराधना साधना, उपासना और तपश्चर्या का इतिहास प्रारंभ हो गया था। यहाँ पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की भव्य आराधना सम्पन्न हुई। पर्युषण पर्व के बाद पूज्य श्री की निश्रा में दशान्हिका महोत्सव और श्री आत्मानंद जैन महासभा का अधिवेशन भी सम्पन्न हुआ।

उन्ही की शुभ निश्रा कें चातुर्मास की पूर्णाहूति के बाद सादड़ी श्रीसंघ की ओर से नव्वाणु यात्रा का भव्य आयोजन हुआ। यहाँ उनकी निश्रा में तीन नव्वाणुं यात्राएँ हुई थी।

ऐतिहासिक पारणा महोत्सव

संसार कें कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व होते हैं जो नवीन इतिहास का सृजन करते हैं, ऐसा इतिहास जो युगों-युगों तक स्मरण किया जाता है और दूसरों के लिए मार्गदर्शन और प्रेरणा का कार्य करता है। ऐसे ही एक प्रेरक और चमत्कृत इतिहास का निर्माण किया अपनी इकहत्तर वर्ष की अवस्था में, हृदय की शल्य चिकित्सा के उपरांत और गच्छधिपति पद की महान जिम्मेवारी सम्हालते हुए जैन दिवाकर आचार्य श्रीमद्

विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज ने वर्षीय तप की महान तपश्चर्या करके जिसका ऐतिहासिक पारणा महोत्सव दि. १३-५-९४ को अक्षय तृतीया के दिन पालीताणा में सम्पन्न हुआ था।

जैन धर्म की श्रमण परंपरा में और पंजाब केसरी, युगवीर आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज के समुदाय में ऐसा कभी नहीं हुआ था कि किसी गच्छधिपति ने बाइपास सर्जरी के बाद वर्षीय तप किया हो और उनके साथ-साथ उनके आज्ञानुवर्ती ३३ श्रमण एवं श्रमणी वृन्द ने उनका अनुसरण करते हुए वर्षीय तप किया हो।

सम्पूर्ण भारत के कोने-कोने में बसे गुरुभक्त पूज्य गुरुदेव के इस पारणा महोत्सव की बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। मास और दिन गिनते हुए जब अक्षय तृतीया निकट आ गई तो सभी गुरुभक्तों के आनंद की सीमा न थी और वे सभी अपने सांसारिक कार्य छोडकर मन और हृदय में अपूर्व आनंद और हर्ष लिए पालीताणा में पहुंच गए थे।

पूज्य गुरुदेव के इस ऐतिहासिक पारणा महोत्सव में समस्त भारत के गुरुभक्तगण उमड़ पहे.थे। विशेष रूप से पंजाब से श्री आत्मानंद जैन महासभा की ओर से श्री रोशनलाल तृप्तारानी जैन पाटनी के संघपतित्व में स्पेशल ट्रेन का आगमन हुआ था। पंजाब से जो गुरुभक्तगण स्पेशल ट्रेन में नहीं आ सके थे वे बसो कारों, मेटाडोरों और हवाई जहाजों से आए थे।

पूज्य गुरुदेव के पारणे में ट्रेन एवं बसों के द्वारा उमड़े पंजाब के परम समर्पित गुरु भक्तो ने एक बार पुनः अपनी अनन्य गुरु भक्ति का दिग् दर्शन गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र को करा दिया। तिर्थ यात्रा के लिए तो अनेक व्यक्ति स्पेशल ट्रेन निकालते हैं; परंतु केवल गुरु भक्ति के लिए स्पेशल ट्रेन निकालने का कार्य तो पंजाबी गुरुभक्त ही कर सकते हैं। इससे बढ़कर पंजाबी गुरुभक्तों की गुरुभक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण और क्या हो सकता है।

पूज्य गुरुदेव के पारणा महोत्सव पर सुप्रसिद्ध

संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन को विशेष रूप से निमंत्रित किया गया था। दि. १२-५-९४ की संध्या को पालीताणा हाई स्कूल के ग्राउंड में उनकी भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

दि. १३-५-९४ को पूज्य गुरुदेव के पारणा उत्सव में उन्होंने गुरुभक्ति के चार गीत सुनाए। उनके सुमधुर कंठ से गुरुभक्ति के गीत सुनकर गुरुभक्त गण झूम उठे थे।

पूज्य गुरुदेव का यह पारणा एक सौ आठ श्रेयांस कुमारों ने इक्षुरस का एक-एक घड़ा बोहरा कर सम्पन्न करवाया। पूज्य गुरुदेव के साथ-साथ उनके आज्ञानुवर्ती अन्य ३३ वर्षीय तप के महान तपस्ती साधु-साध्वियों ने पारणा किया। इस पारणा महोत्सव के कार्यक्रम को राष्ट्रीय दूरदर्शन ने भी प्रसारित किया गया था जिसे समस्त भारत के गुरुभक्तों ने देखा था।

इस वर्षीय तप का पारणा करके पूज्य गुरुदेव ने तपागच्छ नाम सार्थक और गौरव मंडित किया। गुरु वल्लभ के समुदाय में यह एक अविस्मरणीय एवं अपूर्व घटना थी। सम्पूर्ण भारत के गुरुभक्तों के जीवन में यह एक चिरस्मरणीय और दर्शनीय अवसर और महोत्सव था। पूज्य गुरुदेव विश्व में प्रथम ज्योति पुरुष थे जिन्होंने बाइपास सर्जरी के बाद वर्षीतप किया था।

गौरवमय कार्य

जैन दिवाकर आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी

महाराज का व्यक्तित्व और कार्य बहुक्षेत्रीय है। उनके द्वारा सम्पन्न कार्य समाज के सामने हैं। उसकी सबसे बड़ी देन या सबसे अधिक गौरवमय कार्य है एक लाख परमार क्षत्रियों को जैन-धर्म का अनुयायी बनाना। यह कार्य उनका अद्वितीय है। यह उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है जो युगों तक स्मरण की जायेगी।

दुसरी उनकी स्मरणीय देन है जैन-धर्म के मध्यम बर्गीय समाज का उत्थान। उन्होंने सुप्रसिद्ध उद्योगपति, दानवीर सेठ श्री अभयकुमारजी ओसवाल जैसे रत्न को खोजा और एन्हें समाज उत्थान में अपने धन का सद् व्यय करने की प्रेरणा दी। क्योंकि समाज की रीढ़ मध्यम वर्गीय कुटुम्बों के रहने की समुचित व्यवस्था करवायी।

वे चाहते हैं कि साधर्मिक बन्धुओं के लिए हर संघ में साधर्मिक फण्ड हो। जिससे हमारा सहधर्मी भाई दुःखी न रहे। वह दर-दर भटकने के लिए मजबूर न हो।

आचार्य श्री ने सैंकड़ों शहरों और गाँवों में जैन धार्मिक पाठशालाएँ प्रारम्भ करवाई हैं। उनका कहना है कि जैन समाज की नयी पीढ़ी धर्म से विमुख होती जा रही है, उसके लिए बालकों को धार्मिक पाठशाला में पढ़ाया जाये। उन्हें धर्मिक संस्कारों से सिंचित एवं संस्कारित किया जाये। तभी भविष्य में जैन-धर्म जीवित रह पायेगा।

ई. सन् १९९२ में पूज्य गुरुदेव ने अपने पावन चरणों से थली प्रदेश को पावन किया था। राजस्थान का चूरु जिला थली प्रदेश के नाम से जाना जाता है। इस प्रदेश में सौ वर्ष से कोई भी मूर्तिपूजक साधु गया नहीं था, जबकि यहां पर प्रत्येक शहर में जैन मंदिर विद्यमान है, उन सभी मंदिरों में ताले लगे हुए हैं। दो सौ वर्ष पहले सम्पूर्ण थली प्रदेश मुर्तिपूजक सम्प्रदाय का अनुयायी था इस बीच इस क्षेत्र में तेरा पंथी सम्प्रदाय का आगमन हुआ और सभी लोग अमूर्ति पूजक बन गए। पूज्य गुरुदेव ने इस प्रदेश में पधार कर बंद मंदिरों को खुलवाया। मंदिरों का शुद्धिकरण हुआ और लोगों को प्रतिदिन मंदिर जाकर दर्शन करने की प्रतिज्ञा दिलवाई। लाडनूं के पास गोपालपुरा में नवतेरा पंथ के प्रवर्तक श्री चंदन मुनिजी की प्रेरणा से निर्मित नूतन जिन मंदिर की प्रतिष्ठा करवाई। श्री चंदन मुनिजी को नवतेरा पंथ सम्प्रदाय का आचार्य बनाया।

जैन समाज में आचार्य श्रीमद् विजयानंद सुरि (आत्मारामजी) महाराज के नाम से जितनी भी शिक्षण संस्थाएँ और सभाएँ हैं उनमें सबसे अधिक पुरानी संस्था भावनगर की 'श्री जैन आत्मानंद सभा' है। दि. १२-२-१९९४ को पूज्य गुरुदेव की निश्रा में इस सभा ने अपना 'शताब्दी महोत्सव' प्रारंभ किया।

शत्रुंजय महातीर्थ पर दादा की टूंक में विश्व वंद्य विभूति, महान ज्योतिर्धर न्यायाम्भोनिधि आचार्य श्रीमद्

विजयानंद सूरीश्वरजी महाराज की मूर्ति बिराजमान है। उनकी देहरी जीर्ण हो गई थी। पूज्य गुरुदेव ने उस देहरी का नवनीकरण करने की प्रेरणा की और वहां जैसलमेरी पत्थर की सुन्दर कलात्मक देहरी निर्मित हुई। गुरु विजयानंद की प्रतिमा की पुनः प्रतिष्ठा उन्ही की निश्रा में दि. १३-५-१९९४ को भव्यतम रूप से सम्पन्न हुई थी।

न्यायाम्भोनिधि आचार्य श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वरजी महाराज की स्वर्गारोहण शताब्दी के उपलक्ष में पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से अहमदाबाद के उपनगर कृष्णनगर में दि. १७-६-१९९४ को श्री आत्मानंद जैन सभा की स्थापना हुई। इस सभा का लक्ष्य साधर्मिक बन्धुओं का उत्कर्ष करना है।

उन्हीं की प्रेरणा से श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वरजी महाराज के सम्पूर्ण साहित्य का पुनः प्रकाशन हो रहा है। इस के लिए उनकी प्रेरणा से 'श्री विजयानंद सूरी साहित्य प्रकाशन फउंडेशन' की स्थापना की गई।

उन्होंने पावागढ़ तिर्थ जो खण्डहर मात्र रह गया था उसका पुनरुद्धार करवाकर उसे आराधना, साधना एवं शिक्षा का केन्द्र बनाया। वहाँ प्रेरणा देकर बालिकाओं में धार्मिक संस्कार हेतु 'पंजाबी साध्वी श्रीदेव श्रीजी जैन कन्या छात्रालय' का निर्माण करवाया जो कई वर्षो से कार्यरत हैं। कई अधूरे कार्य उनके कर-कमलों द्वारा

पूर्ण हुए हैं। अनेक भव्यात्माओं को दीक्षा प्रदान कर संसार सागर से तारा है । कई अप्रसिद्ध तिर्थों को प्रसिद्ध किया है। कई टुटती मृत प्रायः शिक्षण संस्थाओं को बल दिया हैं। हस्तिनापुर आदि महातीर्थों के विकास मार्ग को प्रशस्त किया है। जयपूर में 'श्री विजय समुद्र-इन्द्र सहधर्मी सहायता कोष' की स्थापना करवायी है। सैंकड़ों लोगों के दुःख दारिद्र को दूर किया है। कई भटके हुए लोगों को सन्मार्ग दिखाया है। कई तपस्याएँ, उपधान, अंजनशलाकाएँ, प्रतिष्ठाएँ, छ'रीपालित संघ निकाले है। अन्य इसी तरह के दृश्य और अदृष्य कार्य जो उनके किसी श्री जीवन परिचय में नहीं समा सकते उनकी कोई सीमा नहीं है।

उनके उदात्त व्यक्तित्व, गौरवमय कार्य और अद्वितीय देन को शब्दो में बांधना नितांत असम्भव है।

पावागढ़ में श्री माणिभद्रवीर देव सिद्धपीठ की स्थापना

पूज्य गुरुदेव के अद्वितीय जीवन कार्यों में पावागढ़ तीर्थ उद्धार के कार्यों का विशिष्ठ स्थान है। यह उनके जीवन की सबसे बड़ी और अहम देन है।

यद्यपि पूज्य गुरुदेव के जीवन और कार्यों का क्षेत्र विराट् बहु क्षेत्रीय और बहुविध है। किसी एक ही स्थान के साथ उनके विराट् व्यक्तित्व को बांधा नहीं जा सकता। फिर भीर पावागढ़ का उनमें सर्वोपरी स्थान

है। वह इसलिए भी नहीं कि एक जैन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों से हमेशा के लिए तिरोहित हो गए तीर्थ का उद्धार किया है और इसलिए भी नहीं कि पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से यह तीर्थ इतिहास के पृष्ठों पर पुनः पुनर्जीवित हो उठा है। वैसे तो हजारों तीर्थ आचार्यों के द्वारा पुनरोद्धार हो रहा हैं। परुतु पावागढ़ तीर्थ के पुनरोद्धार कें एक विशिष्ठता है, एक अनोखापन है और एक नवीनता है जो समग्र भारत के तीर्थों में अन्यत्र कहीं ऐसी विशिष्ठता, अनोखेपन और नवीनता खोजने पर भी नही मिलेगी।

सम्पूर्ण भारत के जैन तिर्थों में पावागढ़ तीर्थ एक मात्र ऐसा अनोखा जैन तिर्थ है जिस तीर्थ में भव्य और कलात्मक जिन मंदिर, धर्मशाला और भोजनशाला के अतिरिक्त शिक्षा प्रचार, साहित्य प्रकाशन्, धर्म प्रचार, संस्कार प्रदान, साधर्मिक सेवा, चिकित्सा के द्वारा जन सेवा, वैयावच्च और जीवदया आदि अन्य अनेक रचनात्मक और ठोस-बुनियादी प्रवृत्तियों का संचालन होता है। पूज्य गुरुदेव ने गुरु वल्लभ के विचारों और कार्यों को यहाँ साकार और मूर्तिमंत रूप दिया है।

पूज्य गुरुदेव के सहायक इष्ट श्रीमाणिभद्रवीर देव हैं। बावन वीरों में श्रीवीर का स्थान इकत्तालीसवाँ है। वे कुमार जातीय भवनपति देव हैं। बाईस हजार देव उनके अधीनस्थ हैं। नव हाथ की उनकी काया है। उनकी दो भुजाएँ। एक हाथ में नागेन्द्र है और दूसरा

हाथ वरद मुद्रा में रहता है। कभी कभी वे अपनी चार भुजाएँ भी दिखाते हैं। उनके शरीर का रंग तप्त स्वर्ण कांति युक्त है। उनके वाहन का प्रतीक हाथी हैं। उनके आवास में दो मूर्तिया हैं। एक मूर्ति भगवान आदिनाथ की है और दूसरी श्री शान्तिनाथजी की। उनका अधिकतर समय परमात्मा की भक्ती, पूजा, आरती और नमस्कार महामंत्र के जाप में जाता हैं। उनके आवास में स्वर्णाक्षरी पुस्तकों का पुस्तकालय है। ज्ञान के प्रति उन्हें अत्यन्त अनुराग है, वे अपनी पर्षदा में ज्ञानगोष्ठी करते हैं।

चैत्र मास की शुल्क पक्षीय पूर्णिमा की मध्य रात्रि के समय वे श्रीमाणिभद्रवीर देव के रूप में उत्पन्न हुए। उनका वार सोमवार हैं और तिथि सुदि एकादशी।

उन्हें देव हुए २५१९ वर्ष हुए हैं। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के दो वर्ष पहले वे देव बने थे। भगवान के निर्वाण कल्याणक में वे सम्मिलित हुए थे। मनुष्य लोक में उनका आवागमन ११०० (ग्यारह सौ वर्ष) से हो रहा हैं।

पूज्य गुरुदेव ने उनकी साधना करके और साढे बारह हजार आहूति देकर श्रीवीर को मध्यरात्रि के समक्ष प्रत्यक्ष किया। पूज्य गुरुदेव की यह आन्तरिक भावना थी कि श्रीवीर मुझे जिस रूप में प्रत्यक्ष हुए हैं उस रूप की उनकी प्रतिमा निर्मित करवाकर पावागढ़ में प्रतिष्ठित की जाए। पावागढ़ श्रीवीर का सिद्धिपीठ बनें। श्रीवीर यहां आकर स्वयं विराजमान हो। गुरुभक्त गण कहीं

अन्यत्र जाने के बजाय पावागढ़ में आएँ। वे श्रीवीर की आराधना करें और श्रीवीर उनकी भक्ति, भावना और भाग्य के अनुसार उन्हें फल प्रदान करें। गुरुदेवों के आशीर्वाद और श्रीवीर की सहाय से गुरुभक्त समाज सदैव आगे बढ़ता रहें। प्रगति के पथ पर बढ़ते हुए उन्हें किसी प्रकार की रुकावट और विघ्न न आएँ। कोई गुरुभक्त दुःखी न रहें, कोई गरीब न रहें। किसी गुरुभक्त की आँखों में आंसू न हो, किसी के चेहरे पर उदासीनता न हो। गुरु वल्लभ की यह बगिया हमेशा प्रसन्न, प्रफुल्लत, हरीभरी और सदाबहार बनी रहें।

पुज्य गुरुदेव की इस आन्तरिक भावना को क्रियान्विति के लिए पावागढ़ में श्रीवीर का एक स्वतंत्र मंदिर निर्मित कराने का निर्णय लिया गया जिसका भूमि पूजन दि. १३-१२-९४ को और शिलान्यास दि. १८-१२-९४ को सम्पन्न हुआ।

दि. १०-५-९५ को यहाँ पूज्य गुरुदेव की निश्रा में, पूज्य कार्यदक्ष आचार्य श्रीमद् जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के मार्गदर्शन में और पंडितरत्न मुनिश्री चन्द्रोदय विजयजी महाराज के शास्त्रीय विधि-विधान पूर्वक श्रीवीर की इकत्तालीस इंच की भव्य, आकर्षक और कलात्मक मूर्ति की प्रतिष्ठा श्रीलालबाग श्रीसंघ की ओर से की गई।

पूज्य गुरुदेव के निवेदन पर श्रीवीर ने पावागढ़ में अपना स्थान- आसन- पीठ ग्रहण किया है। आवे यहाँ

प्रतिदिन प्रातः ९.०० से ९.४५ तक अपने आवास से आकर मूर्ति के मध्य बिराजीत होते हैं। उन्होंने पूज्य गुरुदेव को वचन दिया है कि कैं प्रत्येक गुरुभक्त के प्रत्येक कार्य में उनकी सहायता करूंगा। उनके कार्यों में उपस्थित होने वाली बाधाओं को दूर करुंगा, विघ्नों का विनाश करुंगा। प्रत्येक भक्तजन जो यहाँ आकर मेरी पूजाभक्ति करेगा, दृढ़ संकल्प के साथ मेरे स्तोत्र का गुंजन करेगा। अपने कार्यो में सहाय के लिए मुझे प्रार्थना करेगा। उन्हे मैं अवश्य सहाय करूंगा। उनके कठिन और असाध्य कार्यों को सरल और साध्य बनाऊँगा।

श्रीमद् विजयानंद सूरि स्वर्गारोहण शताब्दी - युगीन कार्य

विश्व वंद्य विभूति, महान ज्योतिर्धर, नवयुग निर्माता, न्यायाम्भोनिधि आचार्य श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वरजी महाराज के नाम से हम भलीभांति परिचित हैं।

वे अद्वीतीय ज्ञान-प्रतिभा सम्पन्न आचार्य थे। वर्तमान जैन धर्म की प्रगति, उन्नति और उत्कर्ष के वे नींव के पत्थर थे। वर्तमान कालीन सभी श्रमण-संघीय शाखाओं के वे वटवृक्ष थे। जैन धर्म, दर्शन इतिहास, संस्कृति और साहित्य के वे प्रबल प्रचारक थे। उन्होंने बारह पुस्तकें लिखी हैं। उनमें अद्भुत कवित्व शक्ति थी। हिन्दी में पूजा रचने वाले वे प्रथम जैनाचार्य थे।

ई. सन् १८३६ में पंजाब के लहरा गांवमें कपूर क्षत्रिय वंश में उनका जन्म हुआ था। इ. सन् २८५३

में उन्होंने मालेरकोटला में स्थानकवासी दीक्षा ली। दस वर्षों तक उन्होंने आगामों का गहन अध्ययन किया। अध्ययन करते हुए उन्हें इस सत्य का ज्ञान हुआ कि जिस जैन सम्प्रदाय में दीक्षित हुआ हूँ वह भगवान महावीर स्वामी द्वारा प्ररुपित सम्प्रदाय नहीं है। इस लिए उन्होंने ई. सन् १८में अहमदाबाद में अपने पंद्रह साथियों के साथ मूर्तिपूजक जैन परंपरा की दीक्षा अंगीकार की।

पंजाब में रहकर उन्होंनें प्राचीन शास्त्र सिद्ध मूर्तिपूजक जैन धर्म का प्रचार और प्रसार किया। तथा दस हजार श्रावकों को मुर्तिपूजक बनाया। पंजाब की भूमि को जैन मंदिरों से अभिमंडित किया। ई. सन् १८८३ में जोधपुर की जनता ने उन्हें न्यायाम्भोनिधि के पद से विभूषित किया। ई. सन् १८८६ में समस्त भारत के संघो ने मिलकर उन्हें आचार्य पद से विभूषित किया। गणधर सुधर्मा स्वामी की इकसठवीं पाट पर आचार्य श्रीमद् विजय सिंह सूरिजी महाराज हुए। उन्हें वि.स. १६८२ में आचार्य पद से अलंकृत किया गया था, उनके स्वर्गवास के बाद जैन धर्म और समाज में सर्वत्र यतियों का साम्राज्य छा गया। दो सौ साठ वर्षों के बाद जैन धर्म और संघ समाज को पूज्य श्री विजयानंद सूरिजी जैसे अद्वितीय, विलक्षण और प्रभावशाली युग पुरुष प्राप्त हुए। जिन्होंने दो सौ साठ वर्षों से चले आ रहे यतियों के एकाधिकार एवं प्रभुत्व को समाप्त कर दिया।

विदेशों में भी उनकी कीर्तिगाथा गुंजति हुई । ई. सन् १८९३ में चिकागो में आयोजित चिकागो विश्व धर्म परिषद् में पधारने का आग्रहपूर्ण निमंत्रण मिला । इस के लिए उन्होंने श्रीवीरचंद राघवजी गांधी को अपने पास रखा और उन्हें जैन धर्म का सम्पूर्ण ज्ञान देकर जैन र्ध के प्रतिनिधि के रूप में चिकागो भेजा। जैन धर्म को सर्व प्रथम बार विश्व रंगमंच पर रखनें वाले श्रीवीरचंद्र राघवजी गांधी थे और इसका श्रेय श्रीमद् विजयानंद सूरी महाराज को जाता है ।

अपने बाद उन्होंने पंजाब केसरी, युगवीर आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज को तैयार किया और यह अंतिम सन्देश दिया कि वल्लभ! श्रावकों की श्रद्धा को स्थिर रखने के लिए मैंने परमात्मा के मंदिरों की स्थापना कर दी है अब तुम सरस्वती मंदिरों की स्थापना करना । जब तक ज्ञान का प्रचार न होगा, तब तक लोग धर्म को नहीं समझेंगे और न ही समाज का उत्थान होगा । यह काम मैं तुम्हारे कंधों पर डालकर जा रहा हूँ । ई. सन् १८९६ में गुजरानवाला में उनका स्वर्गवास हो गया ।

ई. सन् १९९५ एवं १९९६ में परमार क्षत्रियोद्धारक, चारित्र चुड़ामणि, जैन दिवाकर आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सुरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से आचार्य श्रीमद् विजयानंद सूरि महाराज की स्वर्गारोहण शताब्दी मनाई जा रही है । गुरु विजयानंद के महान व्यक्तित्व के अनुरुप आचार्य द्वय की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में इस

शताब्दी के उपलक्ष में कई ऐतिहासिक साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक रचनात्मक, बुनियादी एवं ठोस कार्य हुए ।

उनकी स्वर्गारोहण शताब्दी के पावन प्रसंग पर उनके सम्पूर्ण साहित्य का पुनः प्रकाशन हो रहा हैं । अब तक उनका साहित्य अनुपलब्ध था और जो उपलब्ध है वह अव्यन्त जीर्णावस्था में है । अब तक किसी का भी ध्यान इस ओर नहीं गया था । जब कि सबसे बड़ी महान धरोहर उनकी यही है । उनका प्रकाशन अत्यन्त आवश्यक था । उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए पूज्य गुरुदेव ने प्रेरणा करके श्री विजयानंद सूरि साहिय प्रकाशन फउंडेशन पावगढ़ की स्थापना की । इसी फाउंडेशन के माध्यम से उनके सम्पूर्ण साहित्य का प्रकाशन हो रहा है ।

इसी शताब्दी के उपलक्ष्य में शत्रुंजय सिद्धाचल पर दादा की टूंक में स्थित गुरु आतम की मूर्ति की पुनः प्रतिष्ठा की गई और उनकी देहरी का नवीनीकरण किया गया । महुवा में श्री विरचंन्द राघवजी गांधी की एक मूर्ति शहर के मध्य एक चौराहे पर स्थापित की गई और उस स्थान का नाम श्रीवीरचंद राघवजी गांधी चौक रखा गया । भावनगर में सौ वर्ष से संचालित श्री आत्मानंद जैन सभा की शताब्दी का शुभारंभ किया । इसी भावनगर में श्री आत्मानंद जैन फ्रेंड्स ग्रूप का गठन हुआ । अहमदाबाद में श्री आत्मानंद जैन सभा की

स्थापना की गई । पंजाब केसरी, युगवीर आचार्य श्रीमद् विजयवल्लभ सूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से स्थापित उनके जीवन की अंतिम शिक्षा संस्था श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल झगडिया का पुनरोद्धार किया ।

इस तरह गुरु आतम की शताब्दी के उपलक्ष्य में पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से और पूज्य कार्यदक्ष आचार्य श्रीजी के मार्गदर्शन में कई ऐतिहासिक कार्यों के होने की बुनियाद रखी गई । इस शताब्दी के प्रसंग से गुरुभक्त समाज जागृत हुआ । पूज्य गुरुदेव के आज्ञानुवर्ती अन्य साधु-साध्वियों की प्रेरणा से भी इस शताब्दी के निमित्त कई उपाश्रय, विद्यालय और भवन आदि के निर्माण के आयोजन हुए हैं ।

भायखला में ऐतिहासिक चातुर्मास

भायखला मुम्बई का शंत्रुंजय माना जाता है । यहां स्थित प्रथम तिर्थंकर भगवान आदिनाथ का भव्य, विशाल और कलात्मक जिन मंदिर अपने आपमें अलौकिकता लिए हुए है । यह मुम्बई का हृदय है और जैनों की सर्वाधिक संख्या इस क्षेत्र में है । गुरु भम्तों के लिए तो यह पावन स्थल परम वंदनीय और श्रद्धेय है क्योंकि कलिकाल कल्पतरू, पंजाब केसरी, युगवीर आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सुरीश्वरजी महाराज के पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार यहीं हुआ है । जिस स्थान पर उनका भव्य स्मारक रूप गुरु मंदिर निर्मित है ।

इस क्षेत्र में राजस्थानी गुरु भम्त विशाल संख्या में

बसे हुए हैं जिनकी हार्दिक भावना थी कि वर्तमान गच्छाधिपति, परमार क्षत्रियोद्धारक, चारित्र चूड़ामणि, जैन दिवाकर पूज्य गुरुदेव आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज अपने मुनि मंडल के साथ अपना ई. सन् १९९६ कर चातुर्मास भायखला में करें।

पूज्य गुरुदेव के पिछले थाणा चातुर्मास में ही भायखला श्रीसंघ ने चातुर्मास की साग्रह विनंती प्रारंभ कर दी थी। और भायखला के गुरु भक्तों की भावना का सम्मान करते हुए पूज्य गुरुदेव ने उन्हें अपना १९९६ का अपना आगामी चातुर्मास भायखला में ही करने की स्वीकृति प्रदान कर दी थी। पूज्य गुरुदेव की स्वीकृति से भायखला स्थित गुरुभक्तों के आनंद की परीसिमा नहीं थी।

थाणा चातुर्मास के बाद मुम्बई के आठ मास के विचरण में इनकी निश्रा में जिन शासन प्रभावना के छोटे-बड़े अनगिनत कार्य सम्पन्न हुए जिनका अपना एक अलग इतिहास बना है। जिन जिन श्रीसंघो में और जिन जिन स्थानें पर पूज्य गुरुदेव का आगमन हुआ उन उन श्रीसंघों एवं स्थानों पर उनका भव्य स्वागत हुआ।

दि. २१-११-९५ को थाणा में उपधान तप की माला करवाकर उनका पदार्पण दि. २२-११-९५ को मुलुंड में हुआ। वहां से झवेरी रोड, सूर्योदय नगर, भांडुप, घाटकोपर, सायन, माटुंगा और दादर आदि स्थानों की क्षेत्र स्पर्शना करते हुए दि. १४-१२-९५ को

भायखला में पधारे यहां पूज्य गुरुदेव एवं पूज्य कार्यदक्ष आचार्य श्रीमद् विजय जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की पावन निश्रा में दि. १४-१२-९५ से १८-१२-९५ तक शिवगंज निवासी श्री पुखराज जी कस्तुरचंद जी एवं श्रीमती तुलसीबेन पुखराजजी पालरेचा के जीवित महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ, दि. १६-१२-९५ को यहां संक्रंति समारोह सम्पन्न हुआ ।

दि. २०-१२-९५ को अपनी शारीरिक अस्वस्थता के कारण पूज्य गुरुदेव ने बोम्बे हॉस्पिटल में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया । दि. २५-१२-९५ को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह शेखावत पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद लेने के लिए बोम्बे होस्पिटल आए ।

दि. १८-१-९६ को पूज्य गुरुदेव एवं पुज्य कार्यदक्ष आचार्य श्रीमद् विजय जगच्चन्द्र सुरीश्वरजी महाराज का शुभागमन वरली में हुआ । यहां उनकी निश्रा में श्री संभवनाथ जिनालय का एवं पूज्य गुरुदेव के आचार्य पद के पच्चीस वर्ष की पूर्णाहूति में रजत महोत्सव मनाया गया । इस उपलक्ष्य में यहां पंचान्हिका महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ । इसी के साथ यहां पानीबार निवासी श्री राजेशकुमार एवं कुमारी यमुना का दीक्षा समारोह सम्पन्न हुआ । यहां पूज्य गुरुदेव की निश्रा में भारत जैन महामंडल का ४८वां अधिवेशन आजाद मैदान में सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री. लाल कृष्ण आडवाणी एवं महाराष्ट्र

के उपमुख्यमंत्री श्री गोपीनाथ मुंडे ने आकर पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद लिया ।

इस समारोह के बाद वरली में ही पूज्य गुरुदेव की निश्रा में बेंड़ा निवासी परमगुरु भक्त श्री मूलचंदजी चंदुलालजी तथा कुचनदेवी के जीवित महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन हुआ ।

दि. १३-२-९६ को खार के अहिंसा हॉल में संक्रांति समारोह मनाया गया । इस प्रसंग पर श्री विजयानंद सुरि साहित्य प्रकाशन फाउडेशन की ओर से पूज्य गुरुदेव के आचार्य पद रजत जयंति के उपलक्ष्य में धार्मिक शिक्षकों को पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया ।

१८ फरवरी को पुज्य गुरुदेव की निश्रा में तीन दिवसीय अहिंसा सममेलन एवं नाकोडा भैरव यज्ञ का भव्य आयोजन हुआ । इस समारोह में महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री श्री. गोपीनाथ मुंडे एवं विधायक श्री. मंगल प्रभात लोढ़ा ने पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया

चैत्रमास की आयंबिल तप ओली की आराधना वालकेश्वर में सम्पन्न कराकर पूज्य गुरुदेव का आगमन भाइन्दर में हुआ । यहां उनकी निश्रा में संक्रांति समारोह सहित दि. ९-४-९६ से १३-४-९६ तक विविध महापुजनों के साथ पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन हुआ ।

भाइन्दर के इस महोत्सव की पूर्णाहूति के बाद

पूज्य गुरुदेव एवं कोंकण देश दीपक पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय रत्नाकर सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की पावन निश्रा में मलाड स्थित श्री राजस्थान आदिनाथजैन संघ द्वारा आयोजित सेठ श्री गणपतलाल शेषमलजी पुनमिया कारित गृहचैत्य के मध्य श्री आदिनाथ आदि जिन बिम्बों का भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर दि. १६-४-९६ से दि. २५-४-९६ तक अष्टोत्तरी बृहद् शान्ति स्नात्र सहित दशान्हिका महोत्सव आयोजित हुआ।

मलाड के इस महोत्सव के बाद पूज्य गुरूदेव की निश्रा में थाणा में दि. १०-५-९६ से १७-५-९६ तक श्री रूपचंद जी गणेशमल जी के जीवित महोत्सव के उपलक्ष्य में बीस स्थानक पूजन, भक्तामर पूजन एवं संक्रांति समारोह सहित अष्टान्हिका महामहोत्सव सम्पन्न हुआ।

१४ जून को पूज्य गुरुदेव का पदार्पण जुहू में हुआ। यहां जुहू निवासी परम गुरुभक्त श्री रघुवीर कुमार बाबूरामजी की ओर से पूज्य गुरुदेव की निश्रा में संक्रांति समारोह के पूर्व उनके निवास स्थान पर श्री पार्श्व पद्मावती महा पूजन।

इस प्रकार जिन शासन की ऐतिहासिक प्रभावना करते हुए दि. १८-७-९६ को पूज्य गुरुदेव एवं कोंकण देश दीपक पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय रत्नाकर सूरीश्वर जी महाराज आदि ठाणा का भायखला में ऐतिहासिक

चातुर्मास प्रवेश हुआ । गुरु भक्तों के अपार आनंद एवं असीम उत्साह के बीच गगनभेदी जयकारों के साथ हुआ गुरुदेव का चातुर्मासिक प्रवेश अपने आपमें एक अविस्मरणीय घटना बन गया । जब तक पुज्य गुरुदेव का स्वागत जुलूस पूर्ण नहीं हुआ तब तक मेवराज ने भी अपना बरसने का कार्यक्रम स्थगित रखा ताकि स्वागत शोभायात्रा में विघ्न उपस्थित न हो ।

चातुर्मास के प्रवेश के साथ ही यहां पूज्य गुरुदेव की निश्रा में चातुर्मासिक आराधना का शुभारंभ हो गया।

आचार्य श्रीमद् विजय रत्नाकर सूरीश्वरजी महाराज ने अपने दैनिक प्रवचन में उपदेश प्रासाद एवं धन्य कुमार चरित्र को अत्यन्त रोचक, आकर्षक एवं सरल शैली में प्रस्तुति कर उन्होंने प्रावचनिक प्रभावना का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया । चातुर्मास प्रारंभ होते ही पूज्य गुरुदेव ने अपनी इस अवस्था में और स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में भी सुखशाता पूर्वक अपनी ५४वी वर्धमान तप की ओली की तपश्चर्या पूर्ण की । प्रखर वक्ता मुनिराज श्री अरुण विजयजी महाराज के नेतृत्व में हुए बाल संस्कार शिविर में एक हजार बालकों ने भाग लेकर अपने धार्मिक संस्कार दृढ़ किए ।

पूज्य गुरुदेव की निश्रा में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की यहां भव्य आराधना सम्पन्न हुई । तपस्वी मुनिराज श्री दिव्यरत्न विजयजी महाराज ने मासक्षमण की तपस्या की । अन्य १० मासक्षमण, २०० मोक्षदंड तप हुए,

६७ पंचरंगी तप हुए इस प्रकार अनगिनत अट्ठाइयाँ अट्ठम, कंठाभरण तप, समवसरण तप, सिंहासन नवकार तप, शत्रुंजय तप आदि अनेक तपश्चर्याएं हुई जिनकी सूचि बहुत लम्बी है। भायखला के इतिहास में प्रथम बार इतनी तपश्चर्याएं सम्पन्न हुई ।

पूज्य गुरुदेव की पावन निश्रा में बद. ८-१०-९६ को कलिकाल, कल्पतरु, पंजाब केसरी, युगवीर आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज की पुण्य तिथि भी त्रिदिवसीय समारोह के साथ भव्य रूप से मनाई गई ।

दि. १६-१०-९६ को आजाद मैदान में जैन श्वेताम्बर कॉन्फ्रेंस की स्टेडिंग कमेटी का अधिवेशन एवं पंजाब देशोद्धारक, नवयुग निर्माता, विश्व वंद्य विभूति, महान ज्योतिर्धर आचार्य श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वरजी महाराज की स्वर्गारोहण समापन शताब्दी समारोह मनाया गया । जिस समारोह में मुनि श्री नवीन चन्द्र विजयजी महाराज, डॉ. रमणलाल ची. शाह एवं श्रीपाल जैन के संपादकत्व में प्रकाशित 'श्री विजयानंद सूरि स्वर्गारोहण शताब्दी ग्रंथ' का विमोचन किया गया । इसी के साथ गुरु विजयानंद द्वारा लिखित जैन मत वृक्ष, जैन धर्म विषयक प्रश्नोत्तर, ईसाई मत समीक्षा, जैन धर्म का स्वरूप एवं श्री विजयानंद सूरि पद संग्रह तथा आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज द्वारा लिखित नवयुग निर्माता का विमोचन किया गया । यह सम्पूर्ण साहित्य पूज्य कार्यदक्ष आचार्य श्रीमद् विजय जगच्चन्द्र सुरीश्वरजी

महाराज के मार्गदर्शन में 'श्री विजयानदं सूरि साहित्य प्रकाशन फाउंडेशन पावागढ़' के द्वारा प्रकाशित हुआ है ।

दि. १७-१०-९६ को यहां क्षमापना संक्रांति समारोह मनाया गया। इस समारोह में समस्त भारत के गुरु भक्त संघों ने आकर पूज्य गुरुदेव से क्षमायाचना की । इन दो दिवसीय समारोह में भाग लेने के लिए श्री आत्मानंद जैन महासभा की ओर से एवं महासभा के प्रधान श्री वी. सी. जैन के संघपतित्व कें चार सौ गुरुभक्तों का सामुहिक आगमन हुआ ।

दि. २३-१०-९६ से यहां पूज्य गुरुदेव की निश्रा में बेड़ा निवाणी सेठ श्री देवीचन्द जी धुलाजी गुर्जर परिवार की ओर से आयोजित उपधान तप का शुभारंभ हुआ । इसका द्वितीय प्रवेश दि. २५-१०-९६ को सम्पन्न हुआ । जिसमें विशाल संख्या में तपस्वी आराधक लाभ लेकर कर्म निर्जरा कर अपना मानव जीवन सफल कर रहे हैं ।

पूज्य गुरुदेव का भायखला का यह स्मरणीय, ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व चातुर्मास सदा के लिए चिरस्मरणीय रहेगा । पूज्य गुरुदेव की निश्रा में हुए जिन शासन प्रभावना के अनगिनत धार्मिक कार्यों की श्रृंखला का नया रचा गया इतिहास आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा ।

स्वर्णाक्षरों से अंकित हुए इस चातुमौस की भव्यता

जिन जिन महानुभावों ने अपनी आंखों से देखी है वे कभी अपने जीवन में इसे भूल नहीं पाएंगे ।

पूना नगरी में शासन प्रभावना व संस्मरणीय चातुर्मास

भायखला का ऐतिहासिक चातुर्मास समापन के बाद पूज्य गुरुदेव श्रीजी वरली में श्री राम मिल्स गली में नूतन बने जिनालय में भगवान श्री शांतिनाथजी की भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ ।

वरलीसे विहार कर पूज्य गुरुदेव श्रीजी एवं कोंकण देश दीपक आचार्य श्री विजय रत्नाकर सूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा गोरेगांव पधारे, वहाँ पर उनकी पावन निश्रा में सादड़ी निवासी श्री धीसुलाल जी बदामिया परिवारों की तरफ से श्री सम्मेतशिखर जी स्पेशल ट्रेन यात्रा का आयोजन किया गया । वहाँ पर यात्रियों को मांगलिक सुनाया । वहाँ से विहार करते हुए थाणा पधारे ।

पूना की पावन धरती पर पूज्य गुरुदेव श्रीजी सहित आचार्य श्री विजय रत्नाकर सूरीश्वरजी म. सा. एवं पूज्य उपाध्याय श्री विरेन्द्रविजयजी म.सा. आदि ठाणा पधारे । श्री जैन दादावाडी में १४ जनवरी ९७ की मकर संक्रांति बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई गयी । उसी दिन समस्त पूना श्री संघों ने मिलकर पूज्य गुरुदेव श्रीजी को आगामी चातुर्मास जैन दादावाडी करने के लिये अत्याग्रह पूर्ण विनंती की । वहाँ से चतुर्विध श्री संघ के साथ

गुरुदेव श्रीजी आनंदी पधारे । वहाँ से पावल श्री माणिभद्र जी का पावन तीर्थ होते हुए संगमनेर पधारे ।

संगमनेर में सादड़ी निवासी परमार परिवार वालों ने अपने निजी धनराशि से भगवान श्रीशांतिनाथ का भव्य जिनालय निर्मित किया है । उसकी अंजन शलाका एवं प्रतिष्ठा हेतु पूज्य गुरुदेव श्रीजी एवं उपाध्याय श्री विरेन्द्र विजयजी म. सा. आदि ठाणा पधारे, बडे समारोह के साथ अंजनशलाका का कार्यक्रम में समापन हुआ । संगमनेर में पूज्य गुरुदेव श्रीजी के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में नूतन तीर्थ बन रहा है । वहाँ पर धर्मशाला, उपाश्रय गुरु मंदिर आदि की योजना है ।

वहाँ से विहार कर पूज्य गुरुदेव श्रीजी नासिक, सातारा आदि स्थानों से होते हुए गुजरात राज्य में पधारे । व्यारा में श्री भीखूभाई के. शाह परिवालों एवं श्री संघ व्यारो की भव्य नगर प्रवेश कराया गया । पश्चात् दिनांक १३ मार्च ९७ को नूतन बने जैन आराधना भवन का उद्घाटन का कार्यक्रम हुआ । पश्चात् १६ मार्च ९७ को श्री भीखूभाई के निवास स्थान में बन गये नूतन गृह मन्दिर की बार साख का मुहूर्त एवं संक्रान्ति महोत्सव संपन्न हुआ । वहाँ से पूज्य गुरुदेव श्रीजी बड़ौदा की ओर बिहार किया । बड़ौदा मांजलपूर में फाल्गुनी चातुर्मास चौदह कराकर जानीशेरी आदि श्रीसंघों को लाभान्वित करते हुए अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि क्षेत्र में पहुँचे । वहाँ पर पूज्य गुरुदेव श्रीजी के ७५ वाँ जन्म दिवस अमृत महोत्सव के शुभदिन का कार्यक्रम

एवं संक्रांति का भव्य आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में लोकसभा के उपाध्यक्ष श्री सूरजभान जी एवं स्थानीय विधायकों व समस्त भारत के गुरुभक्त उपस्थित थे ।

बलदगाँव से विहार कर धर्म प्रचार एवं व्यसन मुक्ति के कार्य करते हुए अंकेडिया गाँव पधारे । यह गाँव कार्यदक्ष आचार्य श्री विजय जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी म. सा. की जन्म स्थली है । यहाँ पर नूतन आराधना भवन का निर्मित किया गया । जिसका उद्घाटन हुआ ।

वहाँ से गुरुदेवश्रीजी वालोठी पधारे । वहाँ पर सेवाड़ी निवासी हाल मुंबई के श्री सरेमलजी सोलंकी परिवार की ओर से निर्मित नूतन जिनालय की प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुई । वाठोली जिनालय प्रतिष्ठा के पश्चात् १-५-९७ को उढवण में श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा का प्रवेश कराया गया । यहाँ से दिनांक ३-५-९७ को बड़ा तलाव पधारे । वहाँ पर श्री पार्श्व पद्मावती पूजन का आयोजन किया गया ।

पूज्य गुरुदेव श्रीजी ने बड़ा तलाव से विहार कर ४-५-९७ को श्री पावागढ़ तीर्थ में प्रवेश किया । पावागढ़ तीर्थ में नवनिर्मित आधुनिक देव विमान तुल्य श्री विजय इन्द्र आराधना भवन के निर्माण में पूज्य मुनिपुंगव श्री चन्द्रोदय विजय जी म. सा. की प्रेरणा से श्री लालबाग जैन संघ मांजलपूर बड़ौदा के आर्थिक सहयोग से निर्मित हुआ । इनके हम सदैव ऋणी रहेंगे ।

श्री विजय इन्द्र आराधना भवन का उद्घाटन पोमावा निवासी परम गुरुभक्त श्री अरविन्द कुमार मुलचन्दजी राठोड़ ने किया । श्रीमती कंचनबहन ओटरमलजी रांका भोजनगृह का उद्घाटन सादड़ी निवासी परम गुरुभक्त श्री नरेन्द्रकुमारजी ओटरमलजी व श्री नरेशकुमारजी श्री दिलीपकुमारजी रांका परिवार ने किया । इसी दिन उढवण निवासी श्री विपीनकुमार की दीक्षा समारोह का आयोजन हुआ । श्री विपीनकुमार का नामकरण मुनि श्री दिव्यचन्द्रविजय जी म. सा. रखा गया । पूज्य कार्यदक्ष आचार्य श्री विजय जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का शिष्य घोषित किया गया ।

पावागढ़ तीर्थ से विहार कर गुरु वल्लभ जन्म स्थली बडौदा नगर में ७-५-९७ को प्रवेश किया । मांजलपूर लालबाग बडौदा में पूज्य गुरुदेव श्रीजी के लघु गुरु भ्राता मुनिपुंगव श्री चन्द्रोदयविजयजी म. सा. एवं पूज्य कार्यदक्ष आचार्य श्री विजय जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में नवनिर्मित श्री घंटाकर्ण महावीर जिनालय में भव्य ध्वजदंड व कलश की प्रतिष्ठा महामहोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ । साथ में वर्षीतप के तपस्वियों का पारणा का लाभ खोड़ (राजस्थान) निवासी श्री विमलचन्द्र जी मेहता परिवार ने लिया । इस कार्यक्रम में परम गुरुभक्त श्री सुभाषभाई शाह, श्री किरीटभाई शाह आदि गुरुभक्तों का सराहनीय सहयोग रहा । मांजलपूर से विहार कर अनेकों श्री संघों को लाभान्वित करते हुए जानीशेरी

बड़ौदा में प्रवेश किया । जानीशरी में परम गुरुभक्त श्री अजितभाई झवेरी परिवार वालोंने संक्रांति का लाभ लिया ।

२२-२३ व २५ मई १९९७ का विजय वल्लभ सूरीश्वरजी के समुदाय के साधु साध्वी का सम्मेलन पूज्य वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवन् श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में सम्पन्न हुआ । जिसमें समाज व समुदाय की परिस्थितियाँ को देखते हुए कई प्रस्ताव पारित किये गये । इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए दूर दूर से उग्र विहार करते हुए अनेक साधु साध्वियाँ उपस्थित रहे । जिसमें पूज्य कोंकण देश दीपक आचार्य श्री विजय रत्नाकर सूरीश्वरजी म. सा., पूज्य कार्यदक्ष आचार्य श्री विजय जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी म. सा., श्रुत भास्कर आचार्य श्री विजय धर्मधुरंधर सूरीश्वरजी म. सा., पंडितरत्न, मुनिपुंगव श्री चन्द्रोदयविजयजी म. सा. आदि ठाणा ३२ व समुदाय की वरिष्ठ साध्वी प्रवर्तिनी श्री विनीता श्रीजी म. सा., प्रवर्तिनी साध्वी श्री कमलप्रभाश्रीजी, प्रवर्तिनी साध्वी श्री चितरंजन श्रीजी म. सा., साध्वी श्री ओमकार श्रीजी म. सा., साध्वी श्री वीरेन्द्र श्रीजी म. सा., साध्वी श्री सुमति श्रीजी म. सा., साध्वी श्री पद्मलता श्रीजी म. सा., साध्वी श्री चरणप्रभा श्रीजी म. सा.,साध्वी श्री कल्पयशा श्रीजी म. सा. आदि ठाणा की उपस्थिती रही । इनके अलावा आचार्य भगवन्तों, उपाध्याय भगवन्तों पन्यास भगवन्तों मुनि भगवन्तो एवं साध्वी भगवन्तों भी इस

सम्मेलन के प्रत्येक प्रस्तावों व नियमों को पूज्य गुरुदेव श्रीजी द्वारा प्रस्तावित किया गया ।

बड़ौदा से विहार कर व्यारा (गुजरात) में पूज्य गुरुदेव श्रीजी का ७ जून ९७ को भव्य प्रवेश हुआ । यहाँ पर परम गुरुभक्त श्री भीखुभाई के. शाह परिवार द्वारा नवनिर्मित गृह जिनालय की भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव एवं संक्रांति महोत्सव का आयोजन हुआ । व्यारा से विहार कर सापुतारा, संगमनेर, नासिक होते हुए पूना पधारे ।

पूज्य गुरुदेव वर्तमान गच्छाधिपति, परमार क्षत्रियोद्धारक आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म. सा. व पूज्य कार्यदक्ष आचार्य भगवन्त श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा ८ का १५ जुलाई १९९७ को शिवाजीनगर, पूना से चातुर्मास प्रवेश प्रारंभ हुआ । इस प्रवेश कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव श्रीजी की अगवानी के लिए पूना शहर के महापौर श्रीमती वन्दना चौहान, भाजपा नेता श्री कुलकर्णी एवं दादावाडी जैन टेम्पल ट्रस्ट के समस्त ट्रस्टीगण ने भावभरा स्वागत किया । चातुर्मास प्रवेश के पश्चात् दूसरे दिन १६ जुलाई ९७ को संक्रांति महोत्सव संपन्न हुआ ।

चातुर्मास प्रारंभ होते ही श्रीसंघ में क्रमिक अठ्ठाई, अठ्ठम आदि तपस्याएँ हुई । इनके अतिरिक्त वीस स्थानक तपस्या, नवकार महामंत्र के ६ अक्षरीय, मोघदंड तपस्या हुई ।

१६ अगस्त ९७ को संक्रांति व आजादी की स्वर्ण जयंति व विश्व शांति हेतु त्रिदिवसीय वीस स्थानक पूजन कराया गया । पूज्य गुरुदेव श्रीजी की निश्रामें बालक संस्कार शिबीर का आयोजन चल रहा है । जिसमें करीबन ७०० बालक बालिकाएँ सम्यक् ज्ञान का लाभ ले रहे है ।

पूज्य गुरुदेव वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरिश्वरजी म. सा. व पूज्य कार्यदक्ष आचार्य श्रीविजय जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा ८ एवं साध्वी श्री निर्मला श्रीजी म. सा. आदि ठाणा ५ की पावन निश्रा में पूना शहेर में २८ अगस्त ९७ से ६ सितम्बर ९७ तक पर्यूषण पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । इस पर्यूषण पर्व में श्री संघ में अनेक तपस्याएँ हुई । चौसठ प्रहरी पौषध भी अच्छी संख्या में हुई । पर्यूषण पर्व के पश्यात् चैत्य परिपाटी का आयोजन श्री. मनोहर मा. शांतिलाल श्री बम्बोली की ओर से हुआ ।

१६ सितम्बर ९७ को क्षमापना संक्रांति महोत्सव का आयोजन हुआ । जिसमें भारत वर्ष में समस्त श्री संघों व सभाएँ के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने क्षमायाचना की । क्षमापना संक्रांति महोत्सव का स्वामिवात्सल्य का लाभ लुनावा निवासी श्री चन्दनमलजी रूपचन्दजी परमार ने लिया ।

२७ सितम्बर ९७ को पंजाब केसरी, युगवीर श्री

विजयवल्लभ सूरीश्वरजी म. सा. की ४३ वीं पुण्यतिथी विजय वल्लभ स्कूल, पूना के प्रांगण में मनाई गयी ।

परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म. सा. का ७५ वाँ जन्म दिवस अमृत महोत्सव १५ अक्टूबर १९९७ से २५ अक्टूबर १९९७ को भारत वर्ष में मनाया गया ।

आगामी ९ मई १९९८ वैशाख सुद १३ शनिवार को परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म. सा. की पावन जन्म स्थली सालपुरा (विजय इन्द्र धाम) में नवनिर्मित भगवान श्री आदिनाथ प्रभु जिनालय की भव्य अंजनशलाका व प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न होगा ।

जैन दिवाकर आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज की जीवन सरिता के तट-पुष्प

जन्म	सालपुरा (गुजरात)
पिता का नाम	श्री रणछोडभाई
माता का नाम	श्रीमती बालुबहन
जन्म तिथि	कार्तिक कृष्णा नवमी ई. सन् १९२३
जन्म नाम	श्री मोहनभाई

प्रारम्भिक शिक्षा	श्री वर्धमान जैन बालाश्रम, बोडेली
दीक्षा तिथि	फल्गुन शुक्ला पंचमी, ई. सन् १९४२ नरसंडा (गुजरात)
दीक्षा गुरु	मुनि श्री विनय विजयजी महाराज
दीक्षा नाम	मुनि श्री इन्द्र विजयजी महाराज
बडी दीक्षा	बिजोवा (राजस्थान) आचार्य श्री विकास चन्द्रसूरी महाराज द्वारा
अध्ययन	आगम, संस्कृत, प्राकृत, ज्योतिष, हिन्दी गुजराती भाषा
गणिपद	चैत्र कृष्ण तृतिया ई. सन् १९५४ सूरत (गुजरात)
आचार्य पद	वरली (मुम्बई) बसंत पंचमी ई. सन् १९७०
पदवीदाता	जिन शासन रत्न आचार्य श्री विजय समुद्र सूरीश्वरजी महाराज
नाम	आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज

छरीपालित संघ

१ बोडेली से लक्ष्मणी तीर्थ
२ सरधना से हस्तिनापुर तीर्थ
३ बटाला से कांगडा तीर्थ
४ बीकानेर से जैसलमेर तीर्थ

५ बाड़मेर से नाकोड़ा तीर्थ
६ बड़ौदा से कावी तीर्थ
७ लोनार से अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तिर्थ
८ दिल्ली से हस्तिनापुर तीर्थ
९ होशियारपुर से कांगडा तीर्थ
१० सादडी से शत्रुंजय तीर्थ
११ बड़ौदा से पावागढ़ तीर्थ
१२ पूना से आलन्दी तीर्थ

उपधान तप की आराधना

१	बीकानेर	२	हिंगणघाट
३	लाठारा	४	थाणा
५	हस्तिनापुर	६	लुधियाना
७	सादडी	८	थाना
९	भायखला	१०	भायखला
११	पूना		

अंजनशलाका प्रतिष्ठा

१. पावागढ़, बडौदा (मांजनपुर), मासररोड, खोडसल, भमारिया, डुसा, शानतलावडी, धरोलिया (गुजरात)
२. बीकानेर, जजो, बेडा, नागौर, गोपालपुरा, लुणकरणसर, जयपुर, सादडी (राजस्थान)
३. मुरादाबाद (समाधि मंदिर) अगरा, मुजफ्फरनगर, हस्तिनापुर (उत्तरप्रदेश)

४. जगाधारी, अम्बला (हरियाणा)
५. लुधियाना (सुन्दर नगर) फजिल्का (पंजाब)
६. कांगडा तीर्थ (हिमाचल प्रदेश)
७. आकोला (महाराष्ट्र)
८. विजय इन्द्र नगर (पंजाब)
९. दिल्ली (वल्लभ स्मारक)
१०. पालीताणा गुरुकुल (सौराष्ट्र)
११. शत्रुंजय (दादा के दरबार) में गुरु मूर्ति प्रतिष्ठा
१२. पावागढ़ तीर्थ
१३. अंकेडिया
१४. धनीया उमरवा
१५. उमरकोई
१६. वरली (मुम्बई)
१७. वालोठी (गुजरात)
१८. बडौदा, मांजलपुर
१९. व्यारा (गुजरात)
२०. संगमनेर

पद यात्रा

एक लाख किलोमीटर (पंजाब, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, जम्मू कहश्मीर, बिहार, बंगाला, कर्नाटक, थली प्रदेश)

चातुर्मास सूची

१९४२	ढूंढोर	गुजरात
१९४३	पालनपुर	गुजरात
१९४४	लखतर	गुजरात
१९४५	राजकोट	गुजरात
१९४६	पालीताणा	गुजरात
१९४७	वड़नगर	राजस्थान
१९४८	पिंडवाड़ा	राजस्थान
१९४९	सादडी	राजस्थान
१९५०	पालनपुर	गुजरात
१९५१	पालीताणा	गुजरात
१९५२	बम्बई	महाराष्ट्र
१९५३	बम्बई	महाराष्ट्र
१९५४	बम्बई	महाराष्ट्र
१९५५	पाटण	गुजरात
१९५६	कारवण	गुजरात
१९५७	छोटा उदेपुर	गुजराज
१९५८	बड़ौदा	गुजरात
१९५९	बम्बई, भयखला	महाराष्ट्र
१९६०	चित्रदुर्ग	कर्नाटक
१९६१	हिंगणघाट	महाराष्ट्र

१९६२	लुधियाना	पंजाब
१९६३	दिल्ली	दिल्ली
१९६४	बोडेली	गुजरात
१९६५	मासररोड	गुजरात
१९६६	डभोई	गुजरात
१९६७	बड़ौदा	गुजरात
१९६८	बोडेली	गुजरात
१९६९	पाटण	गुजरात
१९७०	बम्बई	महाराष्ट्र
१९७१	बड़ौदा	गुजरात
१९७२	बोडेली	गुजरात
१९७३	शिवपुरी	मध्यप्रदेश
१९७४	दिल्ली	दिल्ली
१९७५	लुधियाना	पंजाब
१९७६	होशियारपुर	पंजाब
१९७७	आगरा	उत्तरप्रदेश
१९७८	अम्बाला	हरियाणा
१९७९	बीकानेर	राजस्थान
१९८०	बीजोवा	राजस्थान
१९८१	सादडी	राजस्थान
१९८२	पालनपुर	गुजरात

अमृत महोत्सव १९९७ - ९८

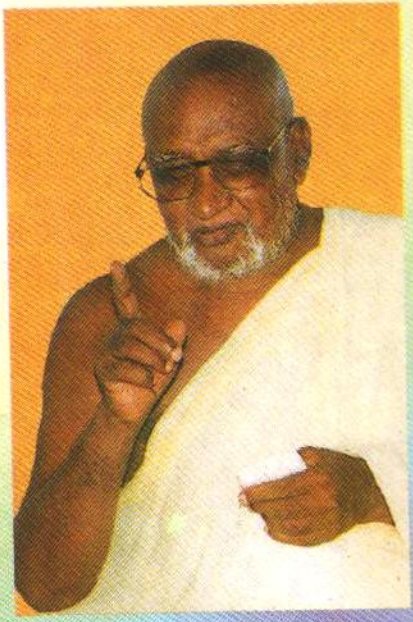

आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म. सा.

लेखक : मुनि नवीनचंद्र विजय